ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

विवेक विचार विमर्श

-: संपादक मंडल :-
प्राचार्य डॉ.अनार साळुंके
प्रा.डॉ.विनोदकुमार वायचळ
प्रा.डॉ.प्रशांत चौधरी
प्रा.डॉ.अर्चना बनाळे
प्रा.डॉ.मिलिंद माने
प्रा.संजय जोशी

ISBN : 978-93-5240-089-8

ISBN :978-93-5240-089-8

विवेक विचार विमर्श

तपस्वी पब्लिक चॅरिटेबल ट्रस्ट, येवती संचलित

व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ
महाविद्यालय, उस्मानाबाद

-: संपादक मंडल :-
प्राचार्य डॉ.अनार साळुंके
प्रा.डॉ.विनोदकुमार वायचळ
प्रा.डॉ.प्रशांत चौधरी
प्रा.डॉ.अर्चना बनाळे
प्रा.डॉ.मिलिंद माने
प्रा.संजय जोशी

(प्रस्तुत शोधालेख संकलन विश्वविद्यालय अनुदान
आयोग नई दिल्ली के अनुदान द्वारा प्रकाशित हुआ है।)

अरुणा प्रकाशन,
लातूर

 ISBN :978-93-5240-089-8

अनुक्रम

१.स्वामी विवेकानंद की विचारधारा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव–डॉ.महेंद्र ठाकुरदास/१
२. विवेकानंद के जीवन दर्शन का साहित्य पर प्रभाव – डॉ.रामकुमार रामरिया/२१
३. स्वामी विवेकानंद के विचारों का हिंदी साहित्यकारों पर प्रभाव– डॉ.ललिता राठोड/२९
४. 'तोडो कारा तोडो' मे चित्रित स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद–डॉ.सुरेश भिमराव गरूड/३५
५. स्वामी विवेकानंद की विचारधारा का हिंदी काव्य पर प्रभाव – प्रा.डॉ.शेख मोहम्मद शाकीर/४३
6. Sister Nivedita's Analysis of Swami Vivekananda's Philosophy -Dr. Anar Ravindra Salunke/47
7. Vivekananda's Concept of Religion and its Application Today- Dr. Archana R. Banale/52
8. Swami Vivekanand: Sustaining Source of Inspiration - Dr.Sangeeta S. Sasane/ Dr.Arjun Galphade/57
9. Vivekananda, Vedanta, and Wave Functions: Exploring the Co-relation between '*Brahman*' and Modern Physics- Dr.Jyotsna Dattatraya/Adv.Chinmay Deshmukh/61
10. Relevance of Swami Vivekananda's thoughts for today - Sachin S. Mahajan/66
11. A Perspective: Swami Vivekananda and Literature- A.J.Khune /74
१२.स्वामी विवेकानंद और इस्लाम–मो.आसिफ अली/७७
१३.स्वामी विवेकानन्द जी और ईसाई धर्म : डॉ. नरेन्द्र कोहली जी रचित उपन्यास 'न भूतो न भविष्यति' के विशेष सन्दर्भ में–प्रा. भीमराज रंगनाथ दळवी/८०
१४.निराला पर स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव–डॉ. संतोष मोटवानी/८३
१५.स्वामी विवेकानंद का दलित दर्शन–डॉ.वडचकर एस.ए. /८७
१६.'योद्धा संन्यासी : स्वामी विवेकानंद' का कथासार–डॉ. अनघा तोडकरी/९२
१७.स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव निराला के विशेष संदर्भ में –प्रा.डॉ. बालाजी गरड/९५
१८.स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का समाजशास्त्र और शिक्षाशास्त्र पर प्रभाव– प्रा.बालिका रामराव कांबळे/९९
१९.स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक विचारधारा – डॉ. साकोळे दत्ता शिवराम/१०२
२०.स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा का भारतीय चलचित्र विधा पर प्रभाव : जी. व्ही. अय्यर निर्देशित चलचित्र 'स्वामी विवेकानन्द'के विशेष सन्दर्भ में–डॉ.विनोदकुमार

 ISBN :978-93-5240-089-8

४३.स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का शिक्षाशास्त्र पर प्रभाव –श्रीगणेश वसंतराव कदम/२१३
४४.स्वामी विवेकानंद के अनमोल विचार –श्री.मैंदाड चित्रांगद लक्ष्मण/२१८
४५.स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा का भारतीय उपन्यास साहित्य पर प्रभाव (डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर लिखित उपन्यास 'विवेकानन्द' के विशेष सन्दर्भ में) – कु. पूजा नारायण ताम्बे/२२४
४६.स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा का भारतीय नाटक साहित्य पर प्रभाव (ज़फ़र संज़ीरी रचित 'सन्देशवाहक' नाटक के विशेष सन्दर्भ में)/ –कु. ज्योति शिवाजी शिन्दे/२२१
४७.महादेवी वर्मा रचित संस्मरण 'निराला भाई' में विवेकानंद के विचारों का प्रभाव –श्री. समीर महम्मद तांबोळी/२२७
४८.सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और स्वामी विवेकानंद के नारी समस्या संबंधी विचार – प्रा.मारोती यमुलवाड/२३०
४९.स्वामी विवेकानंदांचे शैक्षणिक विचार–प्रा.डॉ.सुहास पाठक/२३५
५०.स्वामी विवेकानंदाचे जीवनकार्य –प्रा.डॉ.राजेंद्र गोणारकर/२३९
५१.स्वामी विवेकानंदाचे राजकीय व सामाजिक विचार –प्रा.डॉ.सुहास पाठक/प्रा.डॉ.गणेश जोशी/२४४
५२.स्वामी विवेकानंद : थोर राष्ट्रपुरूष –प्रा.डॉ.सुहास पाठक/श्री.भास्कर भोसले/२४८
५३.स्वामी विवेकानंदाचे शैक्षणिक विचार –डॉ.सौ.सुलभा दिलिपराव देशमुख/ प्रा.उबाळे मोतीलाल सुखदेव /२५१
५४.स्वामी विवेकानंद यांचे स्त्रीविषयक विचार –डॉ. गुंडरे दादाराव/२५५
५५.स्वामी विवेकानंद यांचे युवकांविषयी विचार –प्रा.देविदास भानुदास नागरगोजे/२६०
५६.स्वामी विवेकानंदांचा मानवतावाद –प्रा.दिनकर सुदामराव रासवे/२६४
५७.स्वामी विवेकानंदाचे विचार, चरित्र आणि त्यांचे समकालीन चरित्रकार –प्रा.डॉ.कुलकर्णी जयश्री रमेश/२६८
५८.युवकांच्या चिरंतन स्फूर्तीचे ऊर्जा केंद्र : स्वामी विवेकानंद –प्रा. भालेराव जे.के./२७२
५९.स्वामी विवेकानंदाचे शिक्षण विषयक विचार –प्रा. अशोक रामचंद्र गोरे/२७५
६०.स्वामी विवेकानंदांचे शिक्षण विषयक विचार –डॉ. मेधा गोसावी/२७९
६१.स्वामी विवेकानंद यांचा धार्मिक राष्ट्रवाद –प्रा. डॉ. पदमाकर पिटले/२८३
६२.''स्वामी विवेकानंदाचे आर्थिक व सामाजिक विचार'' –प्रा.डॉ. प्रमोद बालाजीराव बेरळीकर/२८७
६३.' सत्यं शिवं सुंदरम् : एक अमृतानुभव! ' –डॉ प्रशांत गुणवंतराव चौधरी/२९१
६४.स्वामी विवेकानंदांच्या विचारांचा साद प्रतिसाद : 'जान्हवी' –डॉ. सुवर्णा गुंड–चव्हाण/ ३००
६५.स्वामी विवेकानंद यांचे राजकीय विचार –श्री.आघाव श्रीधर सोनराव/३०६
६६.स्वामी विवेकानंद यांचे शैक्षणिक विचार–प्रा.डॉ. सोपान माणिकराव सुरवसे/३१०

ISBN :978-93-5240-089-8

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और स्वामी विवेकानंद के नारी समस्या संबंधी विचार

प्रा. मारोती यमुलवाड
सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग
वलभीम महाविद्यालय, बीड
चलभाष ८७९३६९७७०८

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और स्वामी विवेकानंद की सामाजिक विचाराधारा इतनी मिलती-जुलती है कि ऐसा लगता है कि निराला के मुँह से विवेकानंद बोल रहे हो। निराला की दृष्टि से भारत के समग्र उत्थान में यदि किसी व्यक्तित्व का सर्वाधिक योगदान है तो वे हैं विवेकानंद। निराला कहते हैं,"भारत के उत्थान में जितना हाथ स्वामी विवेकानंद का है, उतना और किसी भी दूसरे का नहीं। स्वामी जी ज्ञानी थे। उन्होंने सूक्ष्म रुप से देश की मुक्ति के लिए सब कुछ कहा है। वे जाति-भेद के प्रबल विरोधी थे। कारण वे जानते थे, गुलामों की कोई जाति नहीं हो सकती। उन्होंने शिल्प, कला, धर्म, विज्ञान सभी राहों से मुक्ति की प्राप्ति बतलायी है । इस तरह देश की सभी कर्मो में प्रोत्साहित किया है। लोग उनकी उक्तियों के बडे-बडे राजनीतिक अर्थ लगाते हैं।"[१]

विवेकानंद ने अपने एक पत्र में लिखा था,"भारत में दो बडी बुरी बातें हैं। स्त्रियों का तिरस्कार और गरीबों को जाति-भेद के द्वारा पीसना।"[२] साथ ही यह भी कि "स्त्रियों की अवस्था को बिना सुधारे जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उडना सम्भव नहीं।"[३] भारत की जिन दो बुरी बातों को जिक्र किया गया उनमें से नारी समस्या पर निराला और विवेकानंद के विचारों से हमें यहाँ परिचित होना है।

भारत में नारी समस्या के अनेक रूप है-"पुरुष और नारी को लेकर दृष्टिकोन का अन्तर, स्त्रियों में बाल-विवाह, विधवा-विवाह, पातिव्रत्य धर्म, सती प्रथा की समस्या, नारी शिक्षा एवं स्वातंत्र्य की समस्या आदि। निराला ने नारी से संबंधित इन समस्याओं पर अपने सुचिन्तित विचार अपने साहित्य के अनेक रूपों के माध्यम से व्यक्त किये हैं।

भारतीय समाज में नारी की दुःखद स्थिति का एक महत्वपूर्ण कारण धर्म रहा है